Janak: A Journal of Humanities
(I S S N : 3 1 1 7 - 3 4 6 2) Volume: 01, Issue: 01, August, 2025
Available on https://janakajournal.in/index.php/1/about

कृष्णा सोबती की दृष्टि और उनके स्त्री पात्र (‘मित्रों मरजानी’ और ‘जैनी मेहरबान सिंह’ के विशेष संदर्भ)

शना परवीन
शोधार्थी
जामिया मिलिया इस्लामिया, (नई दिल्ली)
E-Mail:- sanajrf195@gmail.com

सारांश

कृष्णा सोबती की दृष्टि की प्रगतिशीलता और व्यापकता का प्रमाण है उनका उपन्यास- ‘मित्रों मरजानी’। मित्रों के चरित्र ने भारतीय समाज में ऐसी हलचल पैदा की, कि यह उपन्यास आज भी चर्चा का विषय है। मित्रों वह बातें खुल कर कह रही थी जिनका भारतीय संस्कृति और समाज में निषेध किया गया है। ऐसे कृष्णा सोबती भारतीय संस्कृति में एक बड़े बदलाव की और संकेत करती हैं। मित्रों इस पुरुष-प्रधान समाज की बनाई हुई मर्यादाओं को तोड़ते हुए मज़बूती से सबके सामने खड़ी हो जाती है। जब मित्रों को बड़े पर्दे पर उतारने का प्रयास किया जाता है तब जन्म होता है एक दूसरे साहसी किरदार जैनी मेहरबान सिंह का। ‘जैनी मेहरबान सिंह’ एक पटकथा है जिसमें जैनी पुरानी रूढ़ियों को तोड़कर नये मूल्यों को अपनाती है। पुरुष प्रधान समाज की संकुचित सोच के चलते स्त्री के जीवन में कदम-कदम पर बंधन हैं। मित्रों और जैनी इन बंधनों को तोड़ती हैं। मित्रों और जैनी कृष्णा सोबती के ऐसे साहसी चरित्र हैं जो जड़ हो चुके परम्परागत मूल्यों को खुल कर चुनौती देते हैं और उनमें परिवर्तन भी लाते हैं। इस आलेख का उद्देश्य इन दो रचनाओं के माध्यम से कृष्णा सोबती की दृष्टि को समझना है।

बीज शब्द : *कृष्णा सोबती, संस्कृति, परंपरा, रूढ़ियाँ, समाज, प्रगतिशीलता*

प्रस्तावना :-

किसी भी लेखक की दृष्टि का निर्माण देशकाल, वातावरण, शिक्षा, पारिवारिक परिस्थितियों और जीवन-अनुभव आदि के प्रभाव से होता है। यही दृष्टि उनके साहित्य में परिलक्षित होती है। ‘मित्रों मरजानी’ उपन्यास और पटकथा ‘जैनी मेहरबान सिंह’ में कई महिला पात्रों को चित्रित किया गया है। जिसमें सबसे प्रमुख मित्रों और जैनी हैं। जो सबसे निडर और बेबाक़ हैं। मित्रों एक संयुक्त परिवार में रहते हुए अपनी स्वतंत्रता के लिए विद्रोह करती है। वह उन सांस्कृतिक मान्यताओं को मानने से इंकार कर देती है जिन्हें यह पुरुष-प्रधान समाज हमेशा से स्त्री के ऊपर थोपता आया है। वहीं जैनी एक आधुनिक युवती है जो पुरानी विचारधाराओं को नकारते हुए साकारात्मक ऊर्जा के साथ नये मूल्यों व आदर्शों को अपनाती है। इसी के साथ इन कहानियों में कुछ ऐसे महिला पात्र भी हैं जो परंपरागत सांस्कृतिक मूल्यों व आदर्शों का प्रतिनिधित्व करती हैं। वास्तव में वे पात्र

Author:- Shana Parveen
Email:- sanajrf195@gmail.com
Received:- 09 July, 2025;
Accepted:- 05 August, 2025.
Available online:- 18 August, 2025
Published by JSSCES, Bareilly
This work is licensed under a Creative Commons Attribution-Non Commercial 4.0 International License

पितृसत्तात्मक समाज के पोषक हैं। कृष्णा सोबती की दृष्टि इन व्यवस्थाओं के विरुद्ध स्त्री पात्रों के अंदर चेतना का निर्माण करती है।

मित्रों न किसीसे डरती है न लज्जित होती है, उसके जो मन में आता है वही करती है। मित्रों का जीवन स्वच्छंद है। पुरुष वर्चस्व वाले संयुक्त परिवार में मित्रों अपने यौवन को 'इलाही ताक़त' मानती है। वह अपनी सुंदर देह पर गर्व करती है। पति सरदारी की संगति में मित्रों संतुष्ट न होने पर खुल कर अपनी इच्छा को प्रकट कर देती है। सरदारी उसे पीटता है तब भी वह हार नहीं मानती है। जेठानी से कहती है "जेठानी, तुम्हारे देवर-सा बगलोल कोई और दूजा न होगा, न दुख-सुख, न प्रीति-प्यार, न जलन-प्यास…बस आए दिन धौल-धप्पा…लानत-मलामत!" वह कहती है " सासु जी, जवानी कहीं से माँग कर तो नहीं लाई।" पंजाब के एक साधारण संयुक्त परिवार में एक स्त्री का ऐसा कहना और अपने अस्तित्व के प्रति चेतना का होना साधारण नहीं है। कृष्णा सोबती की दृष्टि में ऐसी स्त्रियों को साहित्य में स्थान मिलना चाहिए जो समाज में तो मौजूद हैं लेकिन साहित्य से ग़ायब। क्योंकि उनका मानना है "मित्रों व्यक्ति की जिस छटपटाहट की प्रतीक है, वह यौन उफान ही नहीं, व्यक्ति की अस्मिता का भी अक्स है, जिसे नारी की पारिवारिक महिमा में भुला दिया जाता है। हाथ की मेहनत और देह से सुखदान, इतना-सा ही उसका यशोगान।" मित्रों के माध्यम से कृष्णा सोबती का कहना यह है कि यह एक स्त्री के केवल यौन इच्छा के प्रकटीकरण के बारे में नहीं है बल्कि एक व्यक्ति का अपनी अस्मिता के प्रति जागरूक होना है। भारतीय समाज में एक आदर्श पारिवारिक स्त्री की जो छवि बनाई गई है, उसके अनुसार एक स्त्री को पूरे परिवार या समाज के सामने खुल कर अपनी यौन इच्छाओं को प्रकट करने का अधिकार नहीं है। पति सरदारी से मित्रों के झगड़े में मित्रों की सास धनवन्ती मित्रों से कहती है "समित्रावंती, इसे ज़िद चढ़ी है तो तू ही आँख नीची कर ले। बेटी, मर्द मालिक का सामना हम बेचारियों को क्या सोहे?" मर्द को मालिक मानना यह विचार धनवन्ती के अंदर कैसे आया? वास्तव में यह पुरुष-प्रधान समाज का ही परिणाम है। ऐसा समाज जहां स्त्री पुरुष के समक्ष बेचारी है, अयोग्य है, पुरुष पर निर्भर है। कृष्णा सोबती अपनी स्त्री पात्रों को उसके अधिकार दे कर इस छवि को बदलने का प्रयास करती हैं। उनके अनुसार स्त्री को अपनी बात कहने का हक़ मिलना चाहिए। महावीर अग्रवाल के साथ बातचीत में नामवर सिंह ने कहा है "कोई भी नया विचार, नया चरित्र, नया व्यवहार हमें अटपटा लगे, या हम उससे सहमत न हों, लेकिन उसमें भी चेतना की अनुगूँज तो होती ही है। 'मित्रों' एक ऐसा ही चरित्र है, सामाजिक रूढ़ियों को तोड़ता हुआ। मित्रों का चरित्रांकन करते समय कृष्णा सोबती पूरी पारदर्शिता रखती हैं। नामवर सिंह ने मित्रों के चरित्र को बनावटी या कृत्रिम न मान कर पारदर्शी, वास्तविक चेतनासम्पन माना है।

कृष्णा सोबती ने मित्रों के सहयोग के लिए एक और क्रांतिकारी चरित्र जैनी को फ़लक पर उतारा है। निर्देशक राम महेश्वरी 'मित्रों मरजानी' को फ़िल्माना चाहते थे। इस पर कृष्णा सोबती ने लिखा है "राम साहिब को पत्र लिखकर पहले धन्यवाद दिया। फिर मित्रों मरजानी के बदले जैनी मेहरबान सिंह को फ़िल्माने का सुझाव दिया। अपनी गति और विविधता में यह मित्रों से कहीं बेहतर रहेगी। उम्मीद करती हूँ कैनेडा में जन्मी-पली सुनहरे बालों वाली जैनी मेहरबान सिंह अपने अंदाज़ में पर्दे पर कुछ नया प्रस्तुत करेगी।" इस तरह जन्म हुआ जैनी मेहरबान सिंह का। जैनी एक आधुनिक युवती है जो किसी भी तरह से पुरुषों से कम नहीं है। जैनी की परवरिश इस ढंग से की गई है, जिसमें लड़का-लड़की में फ़र्क़ नहीं किया जाता है। पितृसत्तात्मक सोच वाला समाज जैनी को देख कर हैरान हो जाता है "सुनहरी बालों वाली लड़की

Janak: A Journal of Humanities
(I S S N : 3 1 1 7 - 3 4 6 2) Volume: 01, Issue: 01, August, 2025
Available on https://janakajournal.in/index.php/1/about

के करतब देख-देख पट्टीवाल और आसपास के इलाक़े में तहलका मच गया। जैनी कभी चुस्त पोशाक में घोड़ा दौड़ाती निकलती, कभी जीप चलाती, कभी खेत पर ट्रैक्टर और कभी स्विमिंग के लिए नहर की ओर निकल जाती।" कृष्णा सोबती कैसे ऐसा साहसी चरित्र रच पाई इसके पीछे उनकी कौनसी दृष्टि काम कर रही थी इस बारे में उन्होंने स्वयं कहा है "बेटे-बेटी के दरम्यान हमारे परिवार में कोई फ़र्क़ नहीं था। माता-पिता की ओर से बराबरी को बरकरार रखा जाता बिना किसी अतिरिक्त सावधानी के। यह बात हम लोगों के लिए कितनी मूल्यवान सिद्ध हुई-यह हमारे दृष्टिकोण और सोच में ज़ाहिर है।...रूढ़ि, परंपरा को ले कर ऐसा लचीलापन कि जो अर्थहीन लगे, उसे बदल दो।" कृष्णा सोबती उन रूढ़ियों और परंपराओं को बदलना चाहती हैं जो समाज को आगे बढ़ने से रोकती हैं। स्त्रियों के विकास को बाधित करती हैं। भारतीय समाज में लड़के और लड़कियों को एक समान न मान कर उन्हें साथ बैठने तक के लिए मना किया जाता है। कृष्णा सोबती जैनी को माध्यम बनाकर इस विचारधारा को बदलना चाहती हैं। जब जैनी लड़कों को लड़कियों के साथ बैठने के लिए बुलाती है तब दादी कहती है "अंधेर साईं की-अरे बिटिया तो मेरी भोली-भालीं है, पर तुम्हें यहाँ के राह-चलन नहीं मालूम। जहां चार लड़कियाँ इकट्ठी बैठी हों वहाँ तुम लोगों का क्या काम!...

जैनी ने दादी माँ को हैरान कर दिया-

-अच्छा दादीमाँ, लड़के-लड़कियों से नहीं मिले-जुलेंगे-उनके संग हँसे-खेलेंगे नहीं तो क्या?" कृष्णा सोबती व्यक्तित्व के संपूर्ण विकास के लिए लड़के-लड़कियों के मिलने-जुलने को आवश्यक मानती हैं। जैनी का आत्मविश्वास ऐसी ही परवरिश का परिणाम है।

मित्रों हो या जैनी दोनों स्वतंत्र रूप से जीवन जीना चाहती हैं। वे बेबाक़ हैं, निडर हैं। दोनों अलग वातावरण में रहती रहीं हैं किंतु दोनों के अंदर अपनी अस्मिता को ले कर चेतना है। ये चरित्र कृष्णा सोबती की विचारधारा का प्रतिनिधित्व करते हैं। शिवशंकरी से बातचीत में उन्होंने कहा है ""नारी-स्वतंत्रता का अभिप्राय मेरे लिए यह है कि मैं अपने आत्म की, अपने व्यक्तित्व की मालिक हूँ और आर्थिक रूप से अपनी देखभाल के लिए किसी पर निर्भर नहीं हूँ। 'आजादी' यानी कोई और मेरी ज़िंदगी को प्रबंधित नहीं कर सकता। एक व्यक्ति के रूप में, मैं स्वयं को स्थित कर पाऊँ और अपने चयन तक बिना किसी समझौते के पहुँच सकूँ।" कृष्णा सोबती अपने जीवन को अपने अनुसार व्यवस्थित करने को स्वतंत्रता मानती हैं।

मित्रों अपने पति से संतुष्ट नहीं है। वह जेठानी से कहती है "देवर तुम्हारा मेरा रोग नहीं पहचानता।...बहुत हुआ हफ़्ते पखवारे...और मेरी इस देह में इतनी प्यास है, इतनी प्यास कि मछली-सी तड़पती हूँ!" वास्तव में कृष्णा सोबती यहाँ एक बनी-बनाई परिपाटी को बदलना चाहती हैं। वह परिपाटी जिसमें स्त्रियों का चित्रण केवल सौंदर्य की दृष्टि से होता रहा है। वह कहती हैं "आदिकाल से स्त्री-पुरुष के संबंधों के ब्यौरों से साहित्य भरा पड़ा है। ज़्यादातर पुरुष ने ही यह दैहिक वर्णन और वृतांत प्रस्तुत किए हैं। स्त्री के सौंदर्य, आकर्षण उसके प्रेम प्यार का उन्माद पुरुष की लिखित में है। अब स्त्री नि:संकोच अपने आंतरिक प्रकरणों को प्रस्तुत कर रही है जिन पर वह कभी मुँह न खोलती थी।" कृष्णा सोबती का मानना है कि अब स्त्री अपने अस्तित्व के प्रति जागरूक हो रही है। उनकी दृष्टि में ऐसा होना भी चाहिए। उनके अनुसार "सोच के स्तर पर परंपरा, घिसी-पिटी नैतिकता और धर्म अनुष्ठान के खूँटों से बंधी आस्थाएँ भी जीवन को पहचानने में असमर्थ रहती हैं।" इस तरह कृष्णा सोबती उन परंपराओं और नैतिक मान्यताओं को बदलना चाहती हैं जिससे व्यक्ति के जीवन में बाधा व

असंतोष उत्पन्न होता है, विशेष रूप से स्त्री के जीवन में। दिल्ली में जैनी जब एक लड़के के साथ डांस करना चाहती है तो जैनी के अंकल हरनाम सिंह कहते हैं "वह खुलेआम विलायती फुदकना-थिरकना हमें मंज़ूर नहीं बच्ची।" यहाँ बात केवल डांस करने की नहीं है, बात है अपने अस्तित्व से जुड़ा निर्णय स्वयं लेने की। जैनी सबके सामने गाना गाती है, डांस भी करती है। जैनी शिक्षित है। वह गाँव में स्कूल और अस्पताल आदि खुलवाती है। इतना ही नहीं वह बड़े पारिवारिक मुद्दों पर मर्दों से बहस करती है और उन्हें सुलझाने का प्रयत्न भी करती है।

भारतीय समाज व संस्कृति में संयुक्त परिवार का हमेशा से महत्वपूर्ण स्थान रहा है। किंतु वर्तमान में अनेक कारणों से पारिवारिक टूटन बढ़ रही है। रणवीर रांग्रा से बातचीत में कृष्णा सोबती ने कहा है "व्यक्ति द्वारा व्यक्ति का शोषण परिवार के बाहर ही नहीं, परिवार के अंदर भी होता है। दरअसल वह परिवार से ही शुरू होता है। परिवार एक रीढ़ है, जिसमें सारा परिवार लगभग एक संसार में धड़कता-कुलबुलाता लगता है, पर एक होता नहीं है। विपरीत कोलाहल, कुलीनता, शालीनता, शिष्टता और भर्त्सना, अपमान, वर्जना-कमज़ोर आदमी घेर लिया जाता है। संयुक्त परिवार के जटिलताओं के तनाव और दबाव ही उसके विघटन का कारण रहे।" 'मित्रों मरजानी' उपन्यास में कथा का आधार पंजाब के एक संयुक्त परिवार को बनाया गया है। यह एक पुरुष-वर्चस्व वाला परिवार है। स्त्रियाँ पुरुषों के अधीन हैं। चाहे वह घर के मुखिया की पत्नी धनवन्ती हो या बड़े बेटे की पत्नी सुहागवंती। वे अधिकांश समय घर को जोड़े रखने और पुरुषों को प्रसन्न रखने का प्रयास करती है। वहीं दूसरी तरफ़ घर की सबसे छोटी बहू संयुक्त परिवार में नहीं रहना चाहती है और घर तोड़ने के बहाने ढूँढती है। इन सब बातों का असर पूरे परिवार पर पड़ता है। इन्हीं कारणों से संयुक्त परिवारों में तनाव बढ़ता जाता है। 'मित्रों मरजानी' में चित्रित परिवार में घर के मर्दों से पर्दा अनिवार्य है। एक मित्रों है जो अपनी इच्छानुसार पर्दा खोल देती है। "मँझली बहू नंगे सिर बैठी चारपाई पर हिन-हिन हंसती थी और बड़ा लड़का बनवारी छाती पर हाथ कसे खड़ा-खड़ा दांत पीसता था।" यहाँ सवाल यह है कि नंगे सिर बैठना और तेज़ हँसना इस घर के लोगों की नज़र में अपराध क्यों है? यह मानसिकता कैसे बनी है? वास्तव में यह केवल इस घर की नहीं, अधिकांश घरों की बल्कि पूरे समाज की मानसिकता है। कृष्णा सोबती इसी सोच को बदलने का प्रयास करती दिखाई देती हैं। उनके विचार इससे अलग हैं। वे समय के साथ संस्कृति और समाज में साकरात्मक बदलाव चाहती हैं। उनका मानना है "एकल परिवार में बड़े होने के कारण मैं संयुक्त परिवार के सदस्यों को विपरीत दिशा से देखूँ तो कह सकती हूँ कि संयुक्त परिवार की संस्कारी मर्यादा व्यक्ति की निजता से बहुत कुछ छीन लेती है। उसके आत्मविश्वास का बड़ा हिस्सा परिवार के दूसरे सदस्यों पर निर्भर होता है। हो जाता है। इसके साथ-साथ व्यक्ति में जो आत्मिक एकांत है वह परिवार के कोलाहल में ग़ायब हो जाता है। उसकी सोच का हर हिस्सा पारिवारिक रूप से सार्वजनिक होता है।" कृष्णा सोबती के अनुसार संयुक्त परिवार में एकांत का अभाव होता है। ऐसे परिवारों में स्त्रियों की राय को कोई विशेष महत्व नहीं दिया जाता है।

कृष्णा सोबती के दोनों स्त्री प्रमुख पात्रों की एक ख़ूबी यह है कि उनमें अकेले निर्णय लेने की क्षमता है। मित्रों के परिवार पर जब आर्थिक संकट आता है तब वह अपने गहने अपने पति को देने का निर्णय लेती है "मित्रों ने एड़ियाँ उठा पड़छत्ती पर से टीन की संदूकची उतारी। ताली लगा लाल पट्ट की थैली निकाली और घरवाले के आगे रख कर बोली-यह दमड़ी दात परवान करो, लाल जी! कौन इस नावे

Janak: A Journal of Humanities
(I S S N : 3 1 1 7 - 3 4 6 2) Volume: 01, Issue: 01, August, 2025
Available on https://janakajournal.in/index.php/1/about

के बिना मित्रों की बेटी कँवारी रह जाएगी।" कठिनाई के समय मित्रों पति और परिवार का साथ देती है। ऐसे ही जैनी अपनी इच्छा से ज़ोरावर से शादी का निर्णय ले कर बरसों पुरानी दुश्मनी को ख़त्म कर देती है "जैनी और ज़ोरावर ने दादी और साहिबा माँ के पाँव छूए तो बैरी ख़ानदानो की पुरानी कहानियाँ आँखें पोंछती दिखीं।" अपने जीवन को ले कर स्वयं इतना बड़ा निर्णय लेना एक बड़ी चेतना का प्रतीक है। जैनी के विवाह के बाद परिवार ख़ुशी-ख़ुशी उनको अपना लेता है। उनके प्रेम-विवाह का तिरस्कार नहीं किया जाता। ऐसे कृष्णा सोबती समाज में एक साकारात्मक बदलाव चित्रित करती है।

अंततः यह कहा जा सकता है कि कृष्णा सोबती का दृष्टिकोण प्रगतिशील है। उन्होंने स्त्री अस्मिता को आधार बना कर अपने स्त्री-पात्र गढ़े हैं। मित्रों और जैनी पितृसत्तात्मक समाज द्वारा बनाए गए आदर्शों को तोड़ती हैं। रूढ़ियों का विरोध करती हैं। कृष्णा सोबती परिवार और समाज के बीच स्त्री-चेतना को रेखांकित करती हैं। इन रचनाओं में स्त्री की सच्ची अनुभूति की तीखी अभिव्यक्ति हुई है। कृष्णा सोबती संस्कृति और समाज में साकारात्मक बदलाव की पक्षधर हैं। उनकी दृष्टि में संस्कृति गतिशील है, जिसमें समय के अनुसार परिवर्तन आवश्यक है। जड़ पड़ती परंपरा और नैतिकता को पकड़े रहना उनकी दृष्टि में सही नहीं है। उनके अनुसार हर मनुष्य को बेहतर और समानता का जीवन जीने का अधिकार है। हर व्यक्ति को उसकी व्यक्तिगत स्वतंत्रता मिलनी चाहिए। हर व्यक्ति की राय को बराबर सम्मान मिलना चाहिए, फिर वो चाहे स्त्री हो या पुरुष। कृष्णा सोबती ने मित्रों के माध्यम से पुरुष-वर्चस्व वाले समाज में रह रही स्त्रियों के जीवन की अनेक परतों को खोला है। कृष्णा सोबती ने उन मुद्दों को खोला है जिन पर बात नहीं होती है लेकिन बात होनी चाहिए। इसी तरह जब बात जैनी की आती है तो दो कदम ओर आगे बढ़ जाती है-जैनी। जैनी को एक अच्छा वातावरण मिला। ऐसी परवरिश मिली जिसकी हर लड़की अधिकारी है। इस तरह कृष्णा सोबती ने दिखा दिया कि बराबरी की परवरिश मिलने पर एक लड़की सब कुछ कर सकती है। अपने जीवन के महत्वपूर्ण निर्णय ले सकती है। स्त्री धर्म के नाम पर सास, पति, परिवार या कह सकते हैं कि पूरे समाज की अनैतिक, विवेकहीन बातों के सामने तन कर खड़ी हैं कृष्णा सोबती की स्त्री पात्र-मित्रों और जैनी।

1. कृष्णा सोबती, 'मित्रों मरजानी', पृ.- 18
2. कृष्णा सोबती, 'मित्रों मरजानी', पृ.-21
3. कृष्णा सोबती, 'लेखक का जनतंत्र', पृ.-18
4. कृष्णा सोबती, 'मित्रों मरजानी', पृ.-12
5. डॉ. नामवर सिंह, 'सबद निरंतर' (पत्रिका), अंक- जनवरी-मार्च 2021, सं.-राके श कु मार सिंह, पृ.-328
6. कृष्णा सोबती, 'जैनी मेहरबान सिंह पृ.-09
7. कृष्णा सोबती, 'जैनी मेहरबान सिंह पृ.-87
8. कृष्णा सोबती, 'लेखक का जनतंत्र', पृ.-150
9. कृष्णा सोबती, 'जैनी मेहरबान सिंह पृ.- 85-86
10. कृष्णा सोबती, 'लेखक का जनतंत्र', पृ.-126
11. कृष्णा सोबती, 'सोबती-वेद संवाद', पृ.-148
12. कृष्णा सोबती, 'लेखक का जनतंत्र', पृ.-54
13. कृष्णा सोबती, 'जैनी मेहरबान सिंह पृ.-46
14. कृष्णा सोबती, 'लेखक का जनतंत्र', पृ.-26
15. कृष्णा सोबती, मित्रों मरजानी', पृ.- 16
16. कृष्णा सोबती, 'सोबती-वेद संवाद', पृ.-162
17. कृष्णा सोबती, 'मित्रों मरजानी', पृ.-49
18. कृष्णा सोबती, 'जैनी मेहरबान सिंह', पृ.-132